(Sep 2011). हिंदी साहित्य में छायावाद का उद्भव, विकास एवं प्रमुख प्रवृत्तियाँ।
International Journal of Economic Perspectives, 5(1), 64-67.
Retrieved from: http://ijeponline.com/index.php/journal

हिंदी साहित्य में छायावाद का उद्भव, विकास एवं प्रमुख प्रवृत्तियाँ।

रामजी लाल मीणा
व्याख्याता - हिन्दी
राजकीय पीजी महाविद्यालय सवाई माधोपुर (राज.)
ई मेल: ramjee1288@gmail.com

सारांश (Abstract)
हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में छायावाद का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। छायावाद हिंदी कविता की वह साहित्यिक धारा है जिसने कविता को भावनात्मक गहराई, आत्मानुभूति, प्रकृति प्रेम, सौंदर्य चेतना, रहस्यवाद तथा व्यक्तिवादी अभिव्यक्ति से समृद्ध किया। हिंदी साहित्य में छायावाद का उद्भव मुख्यतः द्विवेदी युग के पश्चात् हुआ। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में विकसित इस काव्यधारा ने हिंदी कविता को नई संवेदनशीलता, नवीन कल्पनाशीलता और कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की। छायावाद ने कविता को केवल उपदेशात्मकता, नैतिकता और सामाजिक सुधार के सीमित दायरे से बाहर निकालकर मानवीय भावनाओं, आंतरिक अनुभूतियों तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाया।
छायावाद के चार प्रमुख स्तंभ जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत तथा महादेवी वर्मा माने जाते हैं। इन कवियों ने अपनी विशिष्ट काव्य-दृष्टि के माध्यम से हिंदी साहित्य को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। छायावादी कविता में प्रकृति का मानवीकरण, प्रेम और विरह, नारी चेतना, आध्यात्मिक अनुभूति, राष्ट्रीय भावना, सौंदर्यबोध तथा मानवीय संवेदना जैसी अनेक प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में छायावाद के उद्भव की ऐतिहासिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि, उसके विकास क्रम, प्रमुख कवियों के योगदान तथा उसकी मुख्य प्रवृत्तियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।
मुख्य शब्द (Keywords): छायावाद, हिंदी साहित्य, आधुनिक कविता, प्रकृति चित्रण, रहस्यवाद, व्यक्तिवाद, राष्ट्रीय चेतना, नारी चेतना, सौंदर्यबोध, आत्मानुभूति।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य का इतिहास विभिन्न साहित्यिक आंदोलनों, विचारधाराओं और काव्य प्रवृत्तियों के विकास का इतिहास है। प्रत्येक युग की साहित्यिक रचनाओं में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं मानसिक परिस्थितियों का प्रभाव दिखाई देता है। हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में अनेक महत्वपूर्ण साहित्यिक धाराओं का विकास हुआ, जिनमें भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तथा नई कविता प्रमुख हैं। इन सभी साहित्यिक धाराओं में छायावाद का स्थान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।
छायावाद हिंदी कविता के विकास का वह चरण है जिसने काव्य को नवीन भावबोध, कल्पनाशीलता, प्रतीकात्मकता और आत्माभिव्यक्ति की शक्ति प्रदान की। छायावाद के आगमन से हिंदी कविता की विषयवस्तु, भाषा, शैली और अभिव्यक्ति के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन हुआ। द्विवेदी युग की कविता में जहाँ नैतिकता, आदर्शवाद, राष्ट्रीयता और सामाजिक सुधार की भावना प्रमुख थी, वहीं छायावादी कविता में व्यक्तिगत अनुभूतियों, प्रेम, प्रकृति, सौंदर्य और आध्यात्मिक चेतना को विशेष महत्व दिया गया।
छायावाद ने मनुष्य के आंतरिक संसार को साहित्य का महत्वपूर्ण विषय बनाया। इसमें कवि ने अपने हृदय की अनुभूतियों, कल्पनाओं, इच्छाओं, आशाओं, निराशाओं और संवेदनाओं को काव्य के माध्यम से व्यक्त किया। इस प्रकार छायावाद हिंदी कविता में व्यक्तित्व की स्वतंत्र अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण आंदोलन सिद्ध हुआ।

© 2011 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 July 2011, Revised: 09 Aug 2011, Accepted: 18 Aug 2011 Published Sep 2011

(Sep 2011). हिंदी साहित्य में छायावाद का उद्भव, विकास एवं प्रमुख प्रवृत्तियाँ।
International Journal of Economic Perspectives, 5(1), 64-67.
Retrieved from: http://ijeponline.com/index.php/journal

छायावाद का अर्थ एवं स्वरूप

छायावाद शब्द का संबंध 'छाया' से है, जिसका सामान्य अर्थ प्रतिबिंब, आभास अथवा अस्पष्ट अनुभूति से लिया जाता है। साहित्यिक दृष्टि से छायावाद ऐसी काव्यधारा है जिसमें कवि की व्यक्तिगत अनुभूतियों, कल्पनाओं, भावनाओं और सूक्ष्म संवेदनाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति होती है। इसमें प्रत्यक्ष कथन की अपेक्षा संकेत, प्रतीक, बिंब और व्यंजना के माध्यम से भावों को व्यक्त करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

छायावाद की कोई एक सर्वमान्य परिभाषा निर्धारित करना कठिन है, क्योंकि इसके अंतर्गत अनेक प्रकार की भावनात्मक एवं वैचारिक प्रवृत्तियाँ सम्मिलित हैं। फिर भी इसे हिंदी कविता में आत्मानुभूति, सौंदर्य चेतना, प्रकृति प्रेम, रहस्य भावना और व्यक्तिवादी संवेदना के विकास के रूप में समझा जा सकता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने छायावाद की आलोचनात्मक व्याख्या करते हुए उसके भावात्मक एवं शैलीगत स्वरूप पर विचार किया। दूसरी ओर आधुनिक हिंदी आलोचना में छायावाद को हिंदी कविता के आत्मपरक एवं कलात्मक विकास के महत्वपूर्ण चरण के रूप में स्वीकार किया गया है।

छायावादी काव्य में बाहरी संसार की अपेक्षा मनुष्य के आंतरिक संसार को अधिक महत्व प्राप्त हुआ। कवि प्रकृति के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है तथा जीवन के रहस्यों को समझने का प्रयास करता है। यही कारण है कि छायावादी कविता में प्रत्यक्षता की अपेक्षा सांकेतिकता, कल्पना और भावात्मकता का विशेष महत्व है।

छायावाद के उद्भव की ऐतिहासिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि

हिंदी साहित्य में छायावाद का उद्भव अचानक नहीं हुआ, बल्कि इसके पीछे अनेक ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक कारण विद्यमान थे। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों तथा बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में भारतीय समाज अनेक प्रकार के परिवर्तन से गुजर रहा था।

- द्विवेदी युग की साहित्यिक सीमाएँ

छायावाद के उद्भव से पूर्व हिंदी साहित्य में द्विवेदी युग का प्रभाव था। इस युग में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस काल की कविता में राष्ट्रीय भावना, नैतिकता, समाज सुधार, शिक्षा, कर्तव्य और आदर्शवाद की प्रमुखता थी।

द्विवेदी युग की कविता में विषय प्रधानता और उपदेशात्मकता का प्रभाव अधिक था। कविता में व्यक्तिगत अनुभूतियों, सूक्ष्म भावनाओं और कल्पनात्मक सौंदर्य के लिए अपेक्षाकृत कम स्थान था। परिणामस्वरूप नए कवियों ने ऐसी काव्यधारा की आवश्यकता अनुभव की जिसमें व्यक्ति के मनोभावों और आंतरिक अनुभूतियों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त किया जा सके। इसी आवश्यकता ने छायावाद के उद्भव के लिए साहित्यिक आधार तैयार किया।

- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में भारत में स्वतंत्रता आंदोलन गति पकड़ रहा था। राष्ट्रीय चेतना, स्वाधीनता की आकांक्षा तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण का वातावरण विकसित हो रहा था। भारतीय समाज अपनी सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान के प्रति जागरूक हो रहा था।

इस वातावरण का प्रभाव छायावादी कवियों पर भी पड़ा। उनकी कविताओं में स्वतंत्रता, आत्मगौरव, भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना के स्वर सुनाई देते हैं। जयशंकर प्रसाद और निराला की रचनाओं में राष्ट्रीय भावना तथा सांस्कृतिक गौरव की अभिव्यक्ति विशेष रूप से दिखाई देती है।

- पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव

छायावाद के विकास में पाश्चात्य साहित्य की रोमांटिक काव्यधारा का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। अंग्रेजी साहित्य के रोमांटिक कवियों ने प्रकृति, कल्पना, स्वतंत्र व्यक्तित्व, प्रेम और भावनात्मक अनुभूतियों को विशेष महत्व दिया

© 2011 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 July 2011, Revised: 09 Aug 2011, Accepted: 18 Aug 2011 Published Sep 2011

था। वर्ड्सवर्थ, शेली और कीट्स जैसे कवियों की काव्य-दृष्टि ने भारतीय साहित्यिक वातावरण को प्रभावित किया। हालाँकि हिंदी छायावाद को केवल पाश्चात्य रोमांटिकता का अनुकरण नहीं माना जा सकता। इसमें भारतीय दर्शन, वेदांत, उपनिषदों, बौद्ध दर्शन तथा भारतीय सांस्कृतिक चेतना का भी प्रभाव विद्यमान है।

- बंगला साहित्य का प्रभाव

छायावाद के विकास में बंगला साहित्य की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। रवींद्रनाथ ठाकुर की कविताओं में प्रकृति, प्रेम, आध्यात्मिकता, मानवीय संवेदना और सौंदर्य का जो स्वरूप दिखाई देता है, उसने हिंदी के नए कवियों को प्रभावित किया। बंगला साहित्य के माध्यम से हिंदी कविता में भावात्मकता, प्रतीकात्मकता और सूक्ष्म अनुभूति की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिला।

- सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन

इस समय भारतीय समाज में शिक्षा का प्रसार, आधुनिक विचारों का विकास, स्त्री शिक्षा, सामाजिक सुधार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की भावना बढ़ रही थी। व्यक्ति अपने अधिकारों, भावनाओं और स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति जागरूक हो रहा था। इन परिवर्तनों ने साहित्य को भी प्रभावित किया और छायावादी कविता में व्यक्ति की स्वतंत्र चेतना तथा आत्माभिव्यक्ति को प्रमुख स्थान मिला।

छायावाद का विकास क्रम

हिंदी साहित्य में छायावाद का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया के रूप में हुआ। सामान्यतः इसका प्रमुख काल 1918 से 1936 ई. तक माना जाता है। हालाँकि इसकी प्रारंभिक प्रवृत्तियाँ इससे पहले ही दिखाई देने लगी थीं और इसके प्रभाव बाद के साहित्य में भी बने रहे। छायावाद के विकास को निम्नलिखित चरणों में समझा जा सकता है।

- प्रारंभिक अवस्था (1900–1918 ई.)

छायावाद की प्रारंभिक अवस्था में हिंदी कविता में नवीन भावनाओं, कल्पनाओं और व्यक्तिगत अनुभूतियों का विकास प्रारंभ हुआ। इस समय मैथिलीशरण गुप्त, मुकुटधर पांडेय, रामनरेश त्रिपाठी तथा जयशंकर प्रसाद जैसे रचनाकारों ने कविता को नई दिशा प्रदान की।
इस काल में कवियों ने परंपरागत काव्य शैली से हटकर प्रकृति, प्रेम, सौंदर्य और व्यक्तिगत भावनाओं को महत्व देना प्रारंभ किया। जयशंकर प्रसाद की प्रारंभिक कविताओं में छायावादी प्रवृत्तियों के स्पष्ट संकेत मिलते हैं। उनकी रचना 'झरना' को छायावादी काव्य के विकास में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

- विकास की अवस्था (1918–1925 ई.)

इस अवस्था में छायावाद एक सशक्त साहित्यिक आंदोलन के रूप में स्थापित होने लगा। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इस काव्यधारा को व्यापक पहचान दिलाई।
प्रकृति चित्रण, प्रेम, सौंदर्य, रहस्यवाद, कल्पनाशीलता और आत्मानुभूति इस काल की प्रमुख विशेषताएँ बनीं। छायावादी कवियों ने खड़ी बोली हिंदी को काव्यात्मक अभिव्यक्ति का प्रभावशाली माध्यम बनाया।

- उत्कर्ष की अवस्था (1925–1930 ई.)

यह छायावाद का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और रचनात्मक काल माना जाता है। इस अवधि में छायावादी कविता ने भाव, भाषा, शिल्प और कलात्मकता के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त कीं।
सुमित्रानंदन पंत की 'पल्लव', जयशंकर प्रसाद की 'आँसू' तथा निराला की अनेक महत्वपूर्ण रचनाओं ने छायावादी काव्य को समृद्ध किया। महादेवी वर्मा की काव्य प्रतिभा भी इसी दौर में विशेष रूप से विकसित हुई। उनकी कविताओं में विरह, करुणा, रहस्यवाद और आत्मिक अनुभूति की गहरी अभिव्यक्ति दिखाई देती है।

© 2011 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 July 2011, Revised: 09 Aug 2011, Accepted: 18 Aug 2011 Published Sep 2011

- उत्तरवर्ती अवस्था (1930–1936 ई.)

इस अवस्था में छायावादी काव्य में नवीन सामाजिक एवं मानवीय चेतना का विकास हुआ। कवियों का ध्यान केवल व्यक्तिगत अनुभूतियों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सामाजिक विषमता, आर्थिक समस्याओं, शोषण और मानवीय पीड़ा जैसे विषय भी उनकी रचनाओं में स्थान पाने लगे।

निराला की कविता में सामाजिक विद्रोह और जनसाधारण के प्रति सहानुभूति का स्वर अधिक प्रबल हुआ। इसी समय साहित्य में प्रगतिशील विचारधारा का विकास भी होने लगा। धीरे-धीरे छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियों के साथ नई साहित्यिक चेतना का समन्वय हुआ और हिंदी कविता प्रगतिवाद की दिशा में आगे बढ़ी।

इस प्रकार छायावाद ने हिंदी कविता को एक नई भावात्मक एवं कलात्मक पहचान प्रदान की। इसके विकास क्रम और काल निर्धारण के संबंध में साहित्येतिहासकारों के मतों में कुछ अंतर अवश्य मिलता है।

छायावाद के चार प्रमुख स्तंभ एवं उनका योगदान

छायावाद के चार प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा हैं। इन चारों कवियों ने अपनी अलग-अलग काव्य दृष्टि के माध्यम से छायावाद को समृद्ध बनाया।

छायावाद के चार प्रमुख स्तंभ जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा हैं। इन चारों कवियों ने अपनी विशिष्ट काव्य-दृष्टि, भावात्मक अभिव्यक्ति और रचनात्मक प्रतिभा के माध्यम से हिंदी साहित्य में छायावाद को एक महत्वपूर्ण साहित्यिक आंदोलन के रूप में स्थापित किया। जयशंकर प्रसाद ने अपने काव्य में भारतीय संस्कृति, दर्शन, इतिहास, प्रेम और मानवीय संवेदनाओं को प्रमुखता प्रदान की। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'कामायनी', 'आँसू', 'झरना' और 'लहर' उल्लेखनीय हैं। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने छायावादी कविता को नवीन प्रयोगशीलता, सामाजिक चेतना, विद्रोही भावना और मुक्तछंद के माध्यम से समृद्ध किया। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'परिमल', 'अनामिका', 'गीतिका' और 'राम की शक्ति पूजा' विशेष महत्व रखती हैं। सुमित्रानंदन पंत ने प्रकृति, सौंदर्य, प्रेम और कोमल भावनाओं का अत्यंत आकर्षक चित्रण किया तथा हिंदी कविता को नवीन कल्पनाशीलता प्रदान की। उनकी प्रमुख कृतियों में 'पल्लव', 'वीणा', 'गुंजन' और 'ग्राम्या' शामिल हैं। वहीं महादेवी वर्मा ने अपने काव्य में विरह, वेदना, करुणा, रहस्यवाद और आध्यात्मिक अनुभूतियों को प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्रदान की। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत' और 'दीपशिखा' उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार इन चारों साहित्यकारों ने अपनी अलग-अलग रचनात्मक विशेषताओं के माध्यम से छायावादी काव्य को भावात्मक गहराई, कलात्मक सौंदर्य, दार्शनिक चिंतन और मानवीय संवेदनाओं से समृद्ध किया तथा आधुनिक हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों में व्यक्तिवाद, आत्मानुभूति, प्रकृति चित्रण, प्रेम एवं सौंदर्य भावना, रहस्यवाद, आध्यात्मिकता, नारी चेतना, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना, कल्पनाशीलता, प्रतीकात्मकता, करुणा, वेदना और मानवतावाद का विशेष स्थान है। छायावादी कवियों ने अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियों, भावनाओं, कल्पनाओं और मानसिक संवेदनाओं को काव्य के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया। इस काव्यधारा में प्रकृति को केवल बाहरी सौंदर्य के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं के जीवंत प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रेम और सौंदर्य की अभिव्यक्ति में आत्मिक एवं आध्यात्मिक अनुभूतियों को विशेष महत्व दिया गया है। छायावादी कविताओं में रहस्यवाद के माध्यम से अज्ञात एवं परम सत्ता के प्रति जिज्ञासा तथा आत्मा और परमात्मा के संबंधों की अनुभूति व्यक्त होती है। नारी चेतना के अंतर्गत नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व, आत्मसम्मान, अधिकारों और संवेदनाओं को प्रमुखता प्रदान की गई है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय भावना, भारतीय संस्कृति, सामाजिक जागरूकता और मानवतावादी दृष्टिकोण भी छायावादी साहित्य के महत्वपूर्ण पक्ष हैं। छायावादी कवियों ने अपनी

© 2011 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 July 2011, Revised: 09 Aug 2011, Accepted: 18 Aug 2011 Published Sep 2011

भावनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रतीकों, बिंबों, उपमानों और अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया, जिससे कविता में कलात्मकता, संगीतात्मकता और भावात्मक गहराई का विकास हुआ। इस प्रकार छायावाद ने हिंदी कविता को नवीन संवेदनशीलता, कल्पनाशीलता, सौंदर्यबोध और स्वतंत्र अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए आधुनिक हिंदी साहित्य को एक विशिष्ट पहचान दिलाई।

छायावाद की प्रमुख रचनाएँ एवं साहित्यिक योगदान

छायावादी कवियों की रचनाओं ने हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी प्रमुख कृतियों का विवरण निम्नलिखित है।

कवि	प्रमुख रचनाएँ	प्रमुख विशेषता
जयशंकर प्रसाद	कामायनी, आँसू, झरना, लहर	दर्शन, संस्कृति एवं मानव चेतना
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	परिमल, अनामिका, गीतिका, राम की शक्ति पूजा	विद्रोह, मानवतावाद एवं नवीन प्रयोग
सुमित्रानंदन पंत	पल्लव, वीणा, गुंजन, ग्राम्या	प्रकृति एवं सौंदर्य चित्रण
महादेवी वर्मा	नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा	वेदना, करुणा एवं रहस्यवाद

इन चारों कवियों ने अपनी विशिष्ट रचनात्मक प्रतिभा से छायावाद को व्यापक साहित्यिक पहचान प्रदान की। इनके अतिरिक्त मुकुटधर पांडेय, रामकुमार वर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी और बालकृष्ण शर्मा नवीन आदि का भी इस काव्यधारा के विकास में योगदान रहा है।

उपसंहार

हिंदी साहित्य के इतिहास में छायावाद एक महत्वपूर्ण एवं परिवर्तनकारी साहित्यिक आंदोलन के रूप में प्रतिष्ठित है। इसने हिंदी कविता को नवीन भावबोध, कल्पनाशीलता, आत्मानुभूति और कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की। छायावाद के उद्भव के साथ हिंदी कविता में व्यक्ति के आंतरिक संसार, प्रकृति, प्रेम, सौंदर्य, रहस्यवाद और मानवीय संवेदनाओं को विशेष महत्व प्राप्त हुआ।

छायावाद का विकास तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के प्रभाव में हुआ। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और पाश्चात्य रोमांटिक साहित्य की प्रेरणाओं ने इस काव्यधारा को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने द्विवेदी युग की उपदेशात्मक एवं इतिवृत्तात्मक कविता से आगे बढ़कर हिंदी काव्य को अधिक भावात्मक और कलात्मक बनाया।

जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा ने अपनी रचनाओं के माध्यम से छायावाद को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। इन कवियों की काव्य-दृष्टि में विविधता होने के बावजूद आत्मानुभूति, प्रकृति प्रेम, सौंदर्य चेतना और मानवीय संवेदनाओं का समन्वय दिखाई देता है। प्रसाद के काव्य में दर्शन और सांस्कृतिक चेतना, निराला में विद्रोह और सामाजिक यथार्थ, पंत में प्रकृति और सौंदर्य तथा महादेवी वर्मा में करुणा और आध्यात्मिक अनुभूति का विशेष महत्व है।

यद्यपि छायावादी कविता पर अतिभावुकता, कल्पनाशीलता, प्रतीकात्मकता और सामाजिक यथार्थ से दूरी जैसे आरोप लगाए गए, फिर भी इसकी साहित्यिक उपलब्धियों को नकारा नहीं जा सकता। इसने हिंदी कविता को भाषा, शैली, शिल्प और भावाभिव्यक्ति के स्तर पर समृद्ध किया।

अंततः कहा जा सकता है कि छायावाद केवल एक काव्यधारा नहीं, बल्कि आधुनिक हिंदी साहित्य की संवेदनात्मक एवं कलात्मक चेतना का महत्वपूर्ण अध्याय है। इसने हिंदी कविता को नई पहचान प्रदान की और परवर्ती साहित्यिक आंदोलनों के लिए रचनात्मक आधार तैयार किया। हिंदी साहित्य के विकास में छायावाद का योगदान सदैव स्मरणीय

© 2011 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 July 2011, Revised: 09 Aug 2011, Accepted: 18 Aug 2011 Published Sep 2011

रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. शुक्ल, रामचंद्र. (1929). हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
2. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. (1940). हिंदी साहित्य की भूमिका. वाराणसी: हिंदी ग्रंथ रत्नाकर।
3. वाजपेयी, नंददुलारे. हिंदी साहित्य: बीसवीं शताब्दी. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
4. सिंह, नामवर. (1962). छायावाद. राजकमल प्रकाशन।
5. नागेंद्र. सुमित्रानंदन पंत. साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।
6. शर्मा, रामविलास. निराला की साहित्य साधना. राजकमल प्रकाशन।
7. प्रसाद, जयशंकर. कामायनी. विभिन्न संस्करण।
8. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी. परिमल. विभिन्न संस्करण।
9. पंत, सुमित्रानंदन. पल्लव. विभिन्न संस्करण।
10. वर्मा, महादेवी. यामा. लोकभारती प्रकाशन।
11. वर्मा, महादेवी. श्रृंखला की कड़ियाँ. लोकभारती प्रकाशन।
12. तिवारी, शंभुनाथ. हिंदी साहित्य का इतिहास. ई-पाठ्य सामग्री, INFLIBNET.
13. साहित्यशास्त्र और हिंदी समालोचना, MAHL 508. उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय।
14. हिंदी साहित्य का इतिहास-II. महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक।

अतिरिक्त ऑनलाइन संदर्भ:

- INFLIBNET – छायावाद: उद्भव, विकास एवं प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- IGNOU eGyanKosh – छायावाद की पृष्ठभूमि
- उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय – साहित्यशास्त्र एवं हिंदी समालोचना

© 2011 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 July 2011, Revised: 09 Aug 2011, Accepted: 18 Aug 2011 Published Sep 2011